International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 407-408

कुँवर नारायण के काव्य में सामाजिकता

रामकली
शोधार्थी, विषय हिन्दी, नीलम विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

समाज मनुष्यों का वह समुदाय है जो विभिन्न उद्देश्यों के लिए बनता है और यह एक स्थाई संस्था बन जाता है। समाज किसी विशेष जाति या वर्ग का समूह है जो वह समिति लोगों का समुच्चय होगा। जैसे – ब्राह्मण समाज, हरिजन समाज आदि। समाज एक ऐसी इकाई है जो विभिन्न लोगों को साथ में लेकर चलती है और समान अवसर देने का प्रयास करती है। समाज का निर्माण किसी भी उद्देश्य के लिए होता है, बाद में यह स्थाई रूप ले लेता है। समाज के बिना मानव का जीवन उन्नत नहीं हो सकता।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने विचार, अपना ज्ञान एवं विभिन्न अनुभव दूसरों को बांटे और दूसरों से स्वयं ग्रहण करें। अकेला वह होगा जो या तो देवता है या पागल है। मेल–जोल के स्वभाव एवं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समान उद्देश्य वाले लोग मिलकर रहते हैं। खाना–पीना मनोरंजन, व्यवसाय, कृषि आदि विभिन्न कार्यों के उद्देश्य को लेकर मनुष्य को समाज में रहना पड़ता है। समाज में रहना मनुष्य की मजबूरी नहीं है बल्कि उसका स्वभाव है।

व्यक्ति और उसका सम्बंध

व्यक्ति वह जो व्यक्त करे, जब वह अपनी चैतन्य शक्ति के माध्यम से व्यक्त करता है, वह सम्पूर्ण परिवेश को प्रभावित करता है – जो उसका संबंध कहलाता है।

व्यक्ति वह जलकण है जो समाज – सागर निर्मित करता है, उसे तरंगित करता है उसे गति – यति प्रदान करता है। यहां यह कहना उपयुक्त नहीं है कि कि काल में व्यक्ति एवं उसका संबंध कैसा रहा?

जैसा कि हम जानते हैं मुगल साम्राज्य के पतन के साथ समाज और समाज में रहने वाले व्यक्ति का पतन हो चुका था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन ने उसे बाह्य रूप से भी कंगाल कर दिया था। 1857 की क्रांति से थोड़ी बहुत विचारों में तेजी आई लेकिन वह पर्याप्त न थी।

भारतेन्दु काल में समाज का हर व्यक्ति हताश – निराश, कुण्डित, शोषित, स्वार्थी, ईर्ष्यालु आदि अनेक मानसिक विकृतियों का शिकार था। इसके दोषी कई लोग थे और जहां तक उसके संबंधों का प्रश्न है, सर्वप्रथम स्त्री – पुरुष का संबंध । स्त्री – पुरुष संबंध भी विकृत थे। पुरुष स्त्री को अपनी दासी समझता था, उस पर मनचाहे अत्याचार करता था। बाल विवाह व अनमेल विवाह ने स्त्री की दशा अत्यंत दयनीय बना दी थी। धर्म ने भी स्त्री का अपने ही ढंग से शोषण किया। ढोंगी – साधुओं के चक्करमें अनेक स्त्रियों को पतिता बनना पड़ा । इसके बाद वे वेश्यावृति एवं अर्थोपार्जन को ही जीवन का लक्ष्यम मानने लगी। स्त्री की ऐसी ही प्रवृति की एक बानगी भारतेन्दु जी ने प्रस्तुत की है –

''गाती हूँ मैं और नाच सदा काम है मेरा
फन्दे में मेरे कोई निकल नहीं पाता ।
इस गुलशने आलम में बिछा दाम है मेरा ।।
दो चार टके ही पै कभी रात गंवा दूं।
कारुं का खजाना कभी इनआम है मेरा।।''

समाज का अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है – व्यक्ति और उसका संबंध । व्यक्ति वह जो व्यक्त करता है। जब कोई मनुष्य अपने अलावा अपना विस्तार करताहै तो सर्वप्रथम वह परिवार से जुड़ता है। उसकी अनुभूति विस्तृत होती है। वह परिवार से आगे चलकर समुदाय या समाज से जुड़ता है। समाज में वह पद, मित्र, संस्थान, समुदाय या किसी विशेष उद्देश्य पूर्ति हेतु जुड़ जाता है। व्यक्ति समाज से जुड़कर जैसा आचरण करता है वह उसके व्यक्तित्व का निर्माण कराता है और लोगों के प्रति उसका दृष्टिकोण उसकी प्रतिष्ठा – अप्रतिष्ठा को निर्धारित करता है।

कवि कुँवर नारायण प्रयोगवादी कवि है। तार सप्तक के प्रमुख कवियों में से एक है। यही कारण है कि उनके काव्य में वर्तमान मानव की अनुभूति, बौधिकता और सूक्ष्म चिंतन समाया है। उनके काव्य ने तत्कालीन, समस्याओं को मानव और उसके सबंधों से जोड़ा है। इनका मानव उखड़ा – सा हो सकता है किन्तु कवि अन्ततः उसमें विश्वास जमाता प्रतीत होता है।

कुँवर नारयण ने कवि के जिस रुप में उसे ही अपनी एक कविता में 'एक ही अनुरक्ति' का नाम दिया हैः

एक ही अनुरक्ति तक संसार जीता हैः
वह समर्पण है समझ का जिंदगी का
जो किसी विश्वास तक
स्वप को मरने नहीं देता ।

इसी अनुरक्ति से कुँवर नारायण अपने इंसान होने को भी परिभाषित करते हैं :

.....और हम इंसान है वह
जिसे प्रतिपल एक दुनिया चाहिए ।

कुँवर नारायण का इंसान के रुप में आत्मसाक्षात्कार न आत्मग्रस्तता का पर्याय है, न पलयान का। यह प्रतिपल एक दुनिया चाहना दुनिया के प्रतिपल अपने होने को सार्थक बनाने का संकल्प है। कवि को जो कुछ पाना है, वह दुनिया से अपने को अलग करके या आदमी को अपनी आस्था को गँवाकर नही। कवि की खोज

केवल 'शब्द की खोज' नहीं है, आदमी में विश्वास की खोज है :

आज मैं शब्द नहीं
किसी ऐसे विश्वास की खोज में हूँ,
जिसे आदमी में पा सकूँ ।

ऐसी कई कविताएँ ''मैं'' केन्द्रित कविताएँ हैं जिनमें कवि सपाट वक्तव्य सा देता दिखाई देता है, या सीधे – साधे बताता है कि कवि – रुप में उसका अभीष्ट क्या है जैसे कि उत्केन्द्रित शीर्षक कविता में व्यक्ति के अस्तित्व व संघर्ष को व्यक्ति किया है –

मैं जिंदगी से भागना नहीं
उससे जुड़ना चाहता हूँ
उसके काल्पनिक अक्ष पर
ठीक उसी जगह जहाँ वह
सबसे अधिक बेध्य हो कविता द्वारा ।

ऐसे अवसरों पर कविता की मननशीलता कुछ आगे बढ़कर शुष्क तर्क का अमूर्त रुप धारण करती है और सोचना सोचना नहीं रहता, सुलझना हो जाता है।

नारी संबंध

नारी संबंध को कवि ने मालती की बेल के माध्यम से उसकी मुस्कुराहट उसकी जीवंतता को उजागर किया है –

घर की पश्चिम दीवार को यत्न से घेरे
एक अल्हड़ खिलखिलाहट है मालती
आज अचानक क्या हो गया तुझे ?
क्या तेरा बच्चा बीमार है?
क्यों इस तरह सिर झुकाये
गुमसुम खड़ी है मालती?
माली कहता –
राकस होती है मालती की बेल
मर मर कर जी उठने वाली
देसी हिम्मत है मालती
कैसी ही उसे काटो छाँटो
कभी नहीं सूखती है जड़ों से मालती

इस कविता में मालती को देसी हिम्मत कहकर कवि सहजता दुर्निवार होती है यही रेखांकित करता है।

कवि और कलाकार पूर्णतः सामाजिक प्राणी नहीं बन पाते – जो कवि – कलाकार समाज की शर्तों पर नहीं जीते उन्हें नैतिकता, कानून, पार्टी कार्यकर्ता तथा व्यवस्था, यहाँ तक कि उनके कतिपय सहधर्मी भी, हमेशा एक संदिग्ध, साजिशी व्यक्ति समझते हैं –

नजदीक आओ, और नजदीक,
मैं तुम्हारा
या किसी का
बुरा नहीं चाहता ।
तुम क्यों मुझे घेरते हो
अपने शकों से ?
मुझे एक मनुष्य की तरह पढ़ो, देखो और समझो
ताकि हमारे बीच एक सहज और खुला रिश्ता बन सके
माँद और जोखिम का रिश्ता नहीं।''

कवि ने व्यक्ति और समाज में उसके विश्वास को जिंदा देखने की कौशिश की है। वह मनुष्य में विश्वास बनाए रखना चाहता है यहां देखिए –

नहीं, किसी और ने नहीं
मैंने ही तोड़ दिया है कभी – कभी
अपने को झूठे वादे की तरह
यह जानते हुए भी कि बार – बार
लौटना है मुझे
प्रेम की तरफ
विश्वास बनाए रखना है
मनुष्य में सिद्ध करते रहना है
कि मैं टूटा नहीं
चाहे कविता बराबर ही
जुड़े रहना है किसी तरह सबसे

अंत में हम कह सकते हैं कि कुँवर नारायण जी ने व्यक्ति को संघर्षशील और समाज को उसके योग्य होते दर्शाया है।

समाज में वह चाहे तो अपना स्थान बना सकता है। नारी संबंध और पुरुष संबंधों का अर्न्तद्वन्द्व के माध्यम से उभारा है। नचिकेता के रुप में व्यक्तिगत विषाद दर्शायी है। मालती के रुप में मुस्काती नारी का उद्‌भव दिखाया है। वाजसुवा के माध्यम से अंहवादी मानव को इंगित किया है। इस प्रकार इन्होंने स्वच्छंद की बजाय संघर्षशील व्यक्ति और उसके संबंधों को काव्य में उकेरा है।

सन्दर्भ सूची

1. कुँवर नारायण : संसार संपादक यतीन्द्र मिश्र
2. आमने सामने – कुँवर नारायण ।
3. कला और संस्कृति – पंत
4. भारतीय संस्कृति :– डॉ जय किशन प्रसाद
5. उत्केन्द्रित – कुँवर नारायण